International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 98-100

कामख्या देवी के सांकेतिक प्रतिमा का नेपाल की देवी प्रतिमा से तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Amita Agrawal
DSRPDFHS, UGC, Ancient History Archeaology & Culture, DDU GKP, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

कामाख्ये कामसम्पन्नां कामेश्वरी हरप्रियां |
कामनां देहि में नित्यं कामेश्वरी नमोस्तुते ||
कामख्या ध्येताम सर्वदा |

तंत्रसाधना और अघोरियों के गढ़ माने जाने वाले कामख्या मंदिर आसाम की राजधानी दिसपुर से लगभग 17 किलोमीटर दूर नीलांचल पर्वत पर स्थित एक प्रसिद्ध सिद्ध शक्तिपीठ है |यह मंदिर शक्ति की देवी सती का है ,जिसके सन्दर्भ में ज्ञात होता है की यहाँ तंत्र साधना का अत्यधिक महत्व है|प्राचीन काल का सतयुगीन तीर्थ कामख्या वर्तमान में तंत्र सिद्धि का सर्वोच्च स्थल है |नीलशैल पर्वत मालाओं पर स्थित माँ भगवती कामख्या का सिद्ध शक्तिपीठ सती के इक्यावन शक्तिपीठों में सर्वोच्च स्थान रखता है |यहाँ भगवती की महा मुद्रा (योनी कुण्ड) स्थित है |

कामख्या मंदिर को वाममार्ग और साधना के लिए सर्वोच्च शक्तिपीठ का दर्जा दिया गया है |ऐसा माना जाता है कि नाथ पंथ के प्रमुख मच्छेन्द्र नाथ ,गोरखनाथ ,लूनाचमारी और ईस्माइलजोगी आदि जितने भी सिद्ध साधक रहे है ,वे भी इसी स्थान पर साधना किया करते थे और संभवतः यही पर उन्होंने अपनी साधना पूर्ण की थी |

कामख्या देवी के सन्दर्भ पौराणिक कथानक यह स्पष्ट करते है कि पिता दक्ष द्वारा किये जाने वाले यज्ञ की अग्नि में कूद कर सती के आत्मदाह करने पर जब सृष्टि के संघारकर्ता भगवान शिव उनके शव को लेकर तांडव कर रहे थे ,तब सृष्टि के पालन हार भगवान विष्णु ने उनके क्रोध को शान्त करने के लिए अपना सुदर्शन चक्र छोड़कर सती के शरीर के टुकड़े –टुकडे कर दिए थे |उस समय देवी सती की योनी और उनके गर्भ जहाँ आकर गिरे थे |आज उस स्थान पर कामख्या मंदिर स्थित है |

कामख्या मंदिर के सन्दर्भ में अनेक कथाये प्रचलित है जैसे की एक बार काम के देवता कामदेव ने जब अपना पुरुषत्व खो दिया था,तो उन्हें यहाँ पर देवी की योनी एवं गर्भ की कृपा से ही पुरुषत्व की प्राप्ति हुई थी /एक अन्य कथा यह भी है कि इस स्थान पर ही पार्वती और शिव के बीच प्रेम की शुरुआत हुई थी ,अर्थात प्रेम को संस्कृत में 'काम' कहा गया है |पश्चिमी भारत में जो कामारूप की नारी शक्ति के अनेक अलौकिक चमत्कारों की चर्चा लोक साहित्य में प्राप्त होती है |उसका आधार इस कामाक्षी अर्थात कामाख्या देवी के महत्व का ही है |

कामख्या देवी को बहते हुए रक्त की देवी भी कहा जाता है /यहाँ देवी के गर्भ और योनी को मंदिर के गर्भगृह में रखा गया है |इस मंदिर में प्रतिवर्ष अम्बूबाची पर्व को एक वरदान के रूप में मनाया जाता है |यह अम्बुवाची पर्व देवी सती का राजस्वला पर्व होता है|पौराणिक मान्यता अनुसार यह पर्व 16 वर्ष में एक बार ,द्वापर में 12 वर्ष में एक बार,त्रेतायुग में 7 वर्ष में एक बार तथा कलियुग में प्रत्येक वर्ष जून माह में तिथि के अनुसार मनाया जाता है |

ऐसी मान्यता है कि अम्बुवाची पर्व के दौरान माँ भगवती राजश्वला होती है और माँ भगवती की गर्भगृह स्थित महामुद्रा(योनी तीर्थ) से निरंतर तीन दिनों तक जल –प्रवाह के स्थान से रक्त प्रवाहित होता है | ये अपने आप में इस कलिकाल में अद्भुत आश्चर्य का एक विलक्षण नजारा है |

कामख्या तंत्र के अनुसार –

योनी मात्र शरीराय कुंज्वासिनी कामदा |
राजोस्वला महातेजा कामाक्षी ध्येताम् सदा ||[1]

इस सन्दर्भ में राज –राजेश्वरी कामख्या रहस्य दस महाविद्याओं नामक ग्रन्थ के अनुसार गर्भगृह के कपाट इस समय बंद कर दिए जाते है |और तीन दिनों तक देवी का दर्शन भी निषेध हो जाता है |इस पर्व में पूरे विश्व से तंत्र- मंत्र –यंत्र साधना के लिए उच्च कोटि के तांत्रिको एवं अघोरियों का जमावड़ा लगा रहता है |तीन दिन के उपरांत माँ भगवती की राजस्वला समाप्ति के उपरांत उनकी विशेष पूजा- साधना की जाती है,जिसके कारण कामख्या देवी मंदिर को सर्वोच्च 'कौमारी तीर्थस्थल' के नाम से जाना जाता है |यह स्त्री की उर्वराशक्ति की रचनात्मकता को दर्शाता है तथा यह स्पष्ट करता है की स्त्री ही इस ब्रह्माण्ड की जननी है |

कामख्या देवी के मंदिर की गर्भगृह में मूर्ति निर्माण के कोई साक्ष्य नहीं प्राप्त होते है | मंदिर का गर्भगृह एक समतल चट्टान के मध्य योनी रूप में विद्यमान है |प्राकृतिक झरने के कारण यह स्थान हमेशा जल से ओत–प्रोत रहता है |मंदिर परिसर में ही एक अलग मंदिर में माँ के मूर्ति रूप को प्रतिष्ठित किया गया है ,जिनमे प्रमुख रूप से दश महाविद्याओं में – देवी काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बग्लामुखी, मातंगी, और कमला के रूप में प्राप्त होते है |देवी के इन विभिन्न रूपों का उल्लेख हमें शिल्पशास्त्रों में भी प्राप्त होता है |[2]

16 वी शताब्दी में निर्मित माँ कामख्या के मंदिर में तांत्रिक साधना और सिद्धि पूजा का इतिहास पुराना रहा है |कालिका पुराण और योगिनी तंत्र द्वारा इसकी पुष्टि होती है |[3]यहाँ जिस शक्ति की पूजा होती है उसे महामाया के नाम से भी जाना जाता है |महामाया का दूसरा नाम कामख्या भी है |अर्थात माँ का वह रूप जो सभी इच्छाओ को पूरी करता है उसे कामेश्वरी कहा जाता है |यहाँ तंत्र–मंत्र का प्रचलन तीसरी शताब्दी से ही वर्मन वंश के शासन काल से ही प्राप्त होता है |[4]तंत्र साधना एवं तंत्र विद्या की पहचान को आगे बढ़ाने में 9 वी शताब्दी के म्लेच्छ शासको द्वारा शक्ति की पूजा को आगे बढाया गया |तथा बाद के

कालो में राजा इन्द्रपाल और धर्मपाल के शासनकाल में कामख्या तंत्र-मंत्र और सिद्धि का केंद्र स्थल बन चुका था|[5]

कामख्या मंदिर के वर्तमन स्वरुप का निर्माण मध्यकालीन युग में महाराजा अमोध के समय करवाया गया |इस मंदिर की विशेषता यह रही है कि यहाँ अषाढ़ महीने में कामरूप देवी की विशेष पूजा का आयोजन किया जाता है |इसके पश्चात् अगस्त महीने में देवधानी की पूजा होती है,जो माँ के मन्सा रूप को समर्पित है एवं नवरात्री के समय यहाँ कौमरी पूजा का प्रचलन रहता है |[6]

भारत के सामान नेपाल में भी देवी के तंत्र साधना के विभिन्न रूपों की पूजा आराधना के विस्तार प्राप्त होते है |भारत के पडोसी तथा अनुज देश के सामान माने जाने वाले नेपाल की सुरम्य घाटियों में देवी सती की विभिन्न रूपो के मंदिर स्थित है|कही उन्हें छिन्नमस्ता देवी (चांगुनारायण),बज्रयोगिनी (शंखु)तथा मनोकामना देवी (गोरखा)जैसे सिद्ध शक्तिपीठों के रूप में अपने स्थान की प्रसिद्धी प्राप्त है ,जिसके दर्शन हमें काठमांडू घाटी में स्थित अनेक मंदिरों के प्रांगण में देखने को मिलता है |

ऐसा माना जाता है की तंत्र साधना एक ऐसी साधना है ,जिसके माध्यम से साधक अपने इच्छित कार्यों को सिद्ध करने में सफल हो जाता है|इस साधना के रूप में बलिप्रथा ,कलाजादू आदि अनेक सिद्धियों के उल्लेख प्राप्त होते है |[7] इन्ही सिद्धियों के रूप में नेपाल के काठमांडू घाटी में स्थित किर्तीपुर के उमा –माहेश्वर मंदिर प्रांगण से पाषाण खण्ड पर निर्मित मूर्ति प्राप्त हुई है | यह देवी प्रतिमा के रूप में है ,जिसकी निर्माण शैली में शिल्पी द्वारा स्त्री की उर्वरा शक्ति एवं उनके समक्ष त्रिदेवो की उपस्थिति को प्रदर्शित किया गया है|इस प्रकार की अद्भुद मूर्ति निर्माण शैली के शिल्पांकन के सन्दर्भ में साहित्यिक साक्ष्यों एवं शिल्पशास्त्रिय ग्रंथों में उल्लेख नहीं प्राप्त होते है |मूर्ति निर्माण शैली तथा मंदिर प्रांगण में इनकी उपस्थिति यह स्पष्ट करती है कि संभवतः16 वी शताब्दी में मल्लकाल में इसप्रकार के मूर्ति शिल्प को तंत्र साधना हेतु निर्मित करने का प्रावधान प्रारंभ किया गया होगा,अर्थात मूर्ति के स्पष्ट तिथिक्रम की जानकारी नहीं प्राप्त होती है |

नेपाल स्थित उमा-माहेश्वर मंदिर प्रांगण में स्थित मूर्ति शिल्पांकन के अंतर्गत द्विभुजी देवी को धरातल पर सुप्तावस्था में लेटे हुए दर्शाया गया है ,जो पूर्णतः नेपाली शारीरिक रचना में निर्मित है |देवी के योनी मार्ग को इसप्रकार से दर्शाया गया है मानो प्रसव काल में माता के गर्भ से शिशु को जन्म लेते हुए दिखाया गया हो |देवी के योनी मुद्रा का अंकन भारत स्थित कामख्या देवी के प्रतीकात्मक योनी –मुद्रा से समतुल्य प्रतीत होता है |वस्त्र विहीन देवी के वाम पार्श्व में विष्णु को शंख,चक्र,गदा एवं शंख युक्त सर्वाभरण अलंकृत स्थानक मुद्रा में दिखाया गया है |दक्षिण पार्श्व में सृष्टि के निर्माण कर्ता भगवान ब्रह्मा को अक्षमाला एवं पुस्तक धारण किये हुए वरद मुद्रा में दर्शाया गया है |इसीक्रम में देवी के चरणों के समीप माहेश्वर को सर्वाभरण अलंकृत डमरू ,त्रिशूल धारण किये हुए अलंकरण युक्त स्थानक मुद्रा में दिखाया गया है |

देवी के दोनों पार्श्व में एवं उनके चरणों के समीप त्रिदेवो (ब्रह्मा,विष्णु,महेश) की उपस्थिति यह स्पष्ट करती है कि संभवतः यह प्रतिमा देवी के सिद्धि रूप को प्रस्तुत कर रही हो |

नेपाल के काठमांडू घाटी स्थित शंखु नामक स्थान पर बज्रयोगिनी सिद्धि देवी के मंदिर प्राप्त होते है |यह मंदिर ब्राह्मण एवं बौद्ध दोनों धर्मो के अनुयायियों की सिद्धिपीठ मानी जाती है|मंदिर का निर्माण लगभग 16 वी शताब्दी में राजा प्रताप मल्ल द्वारा करवाया गया|शंखु स्थित इस मंदिर में देवी के मुखमंडल को लाल रंग से निर्मित किया गया है ,जिनके मस्तक पर तीन नेत्र सुशोभित है |[10]

इसी क्रम में गोरखा क्षेत्र में स्थित मनोकामना मंदिर भी तांत्रिक एवं सिद्धि योगियों की स्थली मानी जाती है ,जिन्हें सिद्ध शक्तिपीठ के नाम से जाना जाता है |मनोकामना अर्थात मन की इच्छा पूरी होने के कारण यह तीर्थस्थल श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र माना जाता है | मंदिर का निर्माण लगभग 17 वी शताब्दी में गोरखा शासक रामशाह के शासन काल में हुआ था|[11] यहाँ मंदिर के गर्भगृह में शक्ति के रूप में देवी के प्रतीकात्मक रूप को पाषाण खंड के रूप में स्थित माना गया है ,जिनका कोई अलंकारिक रूप नहीं प्राप्त होता है |यहाँ प्रत्येक नवरात्री में अष्टमी के दिन बलि चढाने की परंपरा है |ऐसी धार्मिक मान्यता है कि मनोकामना माता के दर्शन मात्र से ही सभी मनोकांक्षाओं की पूर्ती हो जाती है |

आकृति 1: कामख्या देवी सांकेतिक प्रतिमा ,गुवाहाटी ,असम ,भारत

आकृति 2: त्रिदेवो से युक्त देवी प्रतिमा ,काठमांडू ,नेपाल

आकृति 2: तुलनात्मक सांकेतिक देवी प्रतिमा (भारत एवं नेपाल)

यद्यपि नेपाल में 'कौमारी रूप' की पूजा के प्रचलन प्राप्त होते है ,उन्हें मूर्ति रूप में नहीं अपितु सजीव रूप में बाल कन्या को देवी के रूप में पूजा करने की प्रथा है ,जिसका नेपाल की संस्कृति में अपना विशेष स्थान है ,एवं इसी प्रकार की कौमारी पूजा का प्रचलन कामख्या देवी के मंदिर परिसर में भी प्रचलित है ,जिसका सम्बन्ध दोनों देशों की धार्मिक एवं सांस्कृतिक समानता से लगाया जा सकता है |

सन्दर्भ

1. राज राजेश्वरी कामख्या रहस्य |
2. Dr. Pushpendra kumar: Sakti cult in Ancient India. Bhartiya Publishing House, Varanasi, 1974, 248-49
3. Arun Bhattachrya ,Asam in India independence, 143.
4. Sircar Dc. Political History in Barpujari HK, The comprehensive History of Asam, 1, Guwahati, 94,71
5. Suresh kant Sharma ,usha Sharma : Discovery of North -East India, 2005, 67.
6. Shin-Jac-Eun. yoni yogini and Mahavidya:Femine Devinities from early Medival Kamrupa to Medival Koch Behar, 2010, 156.
7. Dowson John: ACassical Dictionary of Hindu Mythology and Religion, Geography, History, Calcutta Rupa & co., 1984-1879, 143.
8. Hazra RC. The Upapuranas in S.Radhakrishnan. The Cultural Heritage of India. Calcutta, The Ramkrishnan Misson institute of Calcutta, 1962-2003l; 11:280.
9. Shastri B. Kamakhya Tantra ,Bhartiya vidya Prakash Delhi, 1990, 38.
10. आचार्य बाबूराम: नेपाल को संक्षिप्त वृतान्त, काठमांडू, प्रमोद समशेर और नीर विक्रम प्यासी, वी. एस. 2022, 138.
11. पौड्याल, आत्माराम: देवघाट महात्म्य, ललितपुर: प्रवेश और अन्य, वी.एस. 2054, 38.